

निवेदन

सन्निकृष्टाद्वयं यत्र, सपित्तं समभावंत ।
साधु मम्मननं तत्र सफलीभूतं सर्वदा ॥

स्वा जैन समाज में ही नहीं, बलु आवाजों के इतिहास में सादरी का नुस्ख साधु सम्मनन चिरस्मरणीय और नुज्ज्वल ऐतिहासिक प्रसंग बना रहना । अमण भगवान् भी महावीर के निवाण बाद प्रथम क्षणा में परवार १०० वर्ष के बाद मुरा में और २० १४० म वज्जीपुर (साराङ्ग) में श्री देवद्विगणि सुमाधमण के नेतृत्व में जैन साधु समाज एकत्र होने का और जैन सूत्र सिद्धांत लिखित करने का प्रमाण इतिहास में मिलता है ।

इसके १२०० वर्ष के बाद समस्त भारत के स्वा जैन मुनि २२५ से अधिक संख्या में स १६६० चैत्र सु० १० से अहमेर म एकत्र हुए थे । जिसने स्वानुवाणी जैन धर्म की प्राय सभी सम्प्रदायों के मुख्य ७ प्रतिनिधि मुनिराज थे ।

अप्रगल्भ विद्वान् मुनिरात्रों ने जन समाज के उत्थान के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की अदि अर्थ विचार-विनिमय पूर्वक बंधन स्थापन करके समाज का भीज भाया था। मन् तानावधानी राज पदवी म०, पूज्य श्री काशीरामजी म० ने इसकी सीवा था और स्व० पूज्य श्री जवाहरलालजी म० की सम्मेलन में पक्ष हुए वर्तमान संघ की योजना सबके हृदय में गुञ्ज रही थी।

संघ संघ के प्रतीक सा १० मन्तव्यजी म०, पूज्य काशीरामजी म० और स्व० ताराचन्द्रजी म० ने घाटकीपर में एकत्र होकर 'वार संघ' की योजना बनाई और कॉन्फरेन्स के घाटकीपर अधिवेशन में इस योजना का स्वरूप हुआ। इस प्रकार स्वा० जैन समाज का संगठित करने की भावना चलना रही आगे बढ़ती रही।

सन् १९४८ के दिसम्बर में श्री जैन गुडकुल व्यावर के ११ वें वार्षिकोत्सव पर आ स्व० स्वा० जैन कॉन्फरेन्स की ५० व० में गुडकुल की पुनर्न भूमि में 'संघ ऐक्य' की मूर्त स्थापित करने का प्रस्ताव हुआ। इसकी अमली बनाने के लिए जन्म माननीय कुन्दमल्लजी सा० विरोदिगाजी के नेतृत्व में

शिष्ट मंडल ने प्रयाण किया। प्रारम्भ में पाली 'जैन दिवाकर चौधमलजी म० सा० की सेवा में पहुँचा। श्री चिमनलाल चहु भाई के सहयोग से 'सद्य ऐक्य योजना' तैयार की और उस पर मुनिवर्गों की स्वीकृति मिलनी रही। डॉ० फ्रेन्स का और मुनि स० नि० समिति का उत्साह बढ़ना चला, डॉ० फ्रेन्स के मद्रास अधिवेशन में सद्य ऐक्य योजना सर्वानुमति से पास हुई। १० वष में साधु सम्मेलन और बीच २ म प्रान्तीय साधु सम्मेलन और साग्रन्तादिक संगठन करने के प्रयत्न के लिये भी साधु सम्मेलन निधोत्रक समिति बाद्, जिसके सभाजक मंत्री की सेवा का मौभमय मुझे मिला। रायस्थान की १७ सम्प्रदायों का सम्मेलन व्यावर में हुआ था जिसमें ६ सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। डॉ० फ्रेन्स द्वारा प्रकाशित और सद्य की योजना व समाचारों का संशोधन किया था। ६ में से ५ सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायों के नाम और पदविधों का त्याग कर और वर्तमान धर्म सद्य स्थापित किया। पूज्य भी आनन्द अधिजी म० सा० की आचार्य जुने और सहर् साधु सम्मेलन होने तक 'सद्य ऐक्य का आदर्श बना दिया। दूसरे वष

गुनावपुरा में ४ बडों का स्नेह सम्मेलन किया । लीबरी, गैन्ल
 स्कीवन, आदि में सांप्रदायिक सम्मेलन होने लगे । तीसरे वर्ष
 पंजाब प्रान्तीय और गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन लुधियाना और
 गुरेद्वनगर में हुए । समान के अग्रसरों न बार-बार प्रवास करके
 जागृति की । और स० १९०६ बंमान्तु ३ (अजय तृतीया)
 म मादवी (माखा) में श्री वृद्ध साधु सम्मेलन भरने का
 तय हुआ । समय थोड़ा था, विद्वान् लंबा था । यहाँ की मौसम
 थी, फिर भी हमारे बहुसंख्यक मुनिवर अपने स्वास्थ्य की परवा
 किए बिना सबको मिल कर पैदल यात्रा करके यथासमय साज्जा
 पधार गये । भिन्न ३ सत्राओं के सत्र किशनपुर, अजमेर, क्या
 घर में ज्यों ३ मिलने मय, बह प्रेम और उन्नति में मन्द्यता
 लक्षित होने लगे । सम्मेलन काय बड़ा शान्ति, सभ्यता और विवेक
 पूर्ण चला । बाबरन्स प्रमुख के नाम और चिरोदिवाका को तथा
 मन्त्री के माते मुझे सम्मेलन की मय कायकाश में बैठने का
 साभार्य प्राप्त था । चर्च वारा सभा के स्वीकर माय चिरो
 नियाओ सा० न कार्य प्रणाला देखकर कई बार कहा कि,
 'सम्मेलन में जो शान्ति, विश्व और शिस्तबद्ध कार्य होता है
 यह मारासभा से भी अधिक अच्छा होता है ।

दूसरा ध्येय शांतिरत्नक प० मुनि श्री मदनलालजी म०
 मा० और पूज्य श्री गणेशलालजी म० मा० को तथा शान्ति
 दूत उगाध्याय, कवि श्री अमरचन्द्रजी म०, प० श्रीमलजी म०,
 पक्षा प० मौनप्रवमलजी म०, मन्थर मन्त्री मिश्रीमलजी म०
 आदि का है जिन्होंने विचारों की विग्नन में धनूढ प्रयत्न किये ।

सम्मेलन में प्रतिनिधियों के अनिगृह्य दर्शन सन्त तथा
 सनियों का भी बैठने का व्यवस्था मिला था । पै० शु० १ से
 प्रदीप्ति तक ११ दिन की कार्यवाही स्या० जैन समाज के लिए
 गौरवस्प थी । जिसके परिणाम रूप विभिन्न संप्रदायों एक
 आचार्य के नेतृत्व में और एक समावाही में 'श्री वर्धमान स्या
 जैन अमण संप्रदाय के रूप से मुकुटित हो गए हैं । सविन कार्य
 बाग प्रस्ताव रूप में इस पुस्तक में प्रकट है ।

शान्तिरत्नक रूप संप्रदाय का स्थायी और सुदृढ़ बनाने ।
 अमण संप्रदाय के आदर्श पर समस्त स्या० जैन का व्यवहार
 वर्धमान स्या० जैन आचार्य संप्रदाय नगर २ एवं २ म करने । यही
 हार्दिक मद्भागना । जैन जयति शम्भुनाम् । संप्रदाय

धीरपल्लव क० सुरसिया

म श्री, श्री साधु सम्मेलन नियोजक समिति

ॐ आरम्भ

श्री बृहत् साधु सम्मेलन, सादडी का सन्निप्त-विवरणा

प्रारम्भ—ता० १७ ५ ५२ } समाप्ति—ता० ७ ५ ५२
मिती वैशाख शुक्ल ३ } मिती वैशाख शुक्ल १
घो० म० २४७८ रविवार } सं० २००६ बुधवार

—समय—

प्रातः ८ से १०, मध्याह्न १ से ४, रात्रि ८॥ स १०

सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि,

१—पू० श्री आत्मारामजी म० सा० की सप्रदाय
मुनि ८७, आर्या ८१

प्रतिनिधि ४—व्याख्याय श्री प्रेमचन्द्रजी महारा
युगधाय श्री शुक्लचन्द्रजी
व्या० जा, प० मुनिश्री महाशालजी
वक्ता प० मुनि श्री विमलचन्द्रजी ३

(७)

२—पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० की सम्प्रदाय क
मुनि ३४

आज्ञानुसारिणी रगुनी मांताजी म्वेताजी की
आया ७१,

प्रतिनिधि ५—पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज

प० मुनि श्रीमलजी / ॥

॥ श्री नानालालजी ॥

॥ श्री सुमरच-दजा ॥

॥ श्री आदशानजी ॥

३—पूज्य श्री आनन्दश्रृपिजी म० सा० की सम्प्रदाय क
मुनि १६, आर्या ८५

प्रतिनिधि ५—पूज्य श्री आनन्दश्रृपिजी महाराज

प० मुनि श्री उत्तमश्रृपिजी ॥

कवि श्री हरिश्रृपिनी ॥

प० मुनि श्री मोतीश्रृपिजी ॥

॥ ॥ भानुश्रृपिनी ॥

(८)

४—पूज्य श्री सूरचन्द्रजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ६४, आया ३८

प्रतिनिधि ४—पं मुनि भी कन्नूरचन्द्रजी महाराज
उपाध्याय श्री प्यारचन्द्रजी ,
पूज्य श्री शैवमलजी "
गुना० श्री रामलालजी "
प० मुनि भी मनोहरलालजी "

५—पूज्य श्री धर्मदामजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि २१, आया ८६

प्रतिनिधि ५—पं मुनिभी प्र वक्ता सौभाग्यमलजी म
 " मूर्धमुनिजी "
" " राता० केवल मुनिजी "
" " मधुरा "
" " सागर "

६—पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि १३ आया १०५

प्रतिनिधि ४ स्वविर मुनि श्री पूर्णमलजी महाराज
(अनुपस्थित)

आत्मार्षी इन्द्रमलजी ११

मुनिश्री लालचन्दजी ११

११ ११ मोहनलालजी ११

७—पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ६, आर्या ३३

प्रतिनिधि ७—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
मुनि श्री लखमीचन्दजी महाराज

८—पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ५, आर्या ७

प्रतिनिधि ९—प० मुनि श्री दामालालजी महाराज

९—पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि १४, आर्या ३०

प्रतिनिधि १०—प० मुनि श्री अम्बालालजी महाराज

१० १० कवि श्री शातिलालजी महाराज

४—पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० (मरुघर) के
मुनि ७, आर्या ६५

प्रतिनिधि ३—मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज
भ्य मुनि श्री नारायणदासजी ,,
प० मुनि श्री पुष्कर मुनिजी ,,

५—पूज्य श्री धुनायजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि २, आर्या २६

प्रतिनिधि २—मंत्री मुनि श्री मिथीलालजी म०
मुनि श्री रूपचन्दजी म०

६—पूज्य श्री चौयमलजी म० सा० (मरुघर) की
संप्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी म० क
मुनि ४, आर्या ७

प्रतिनिधि १—प० मुनि श्री रूपचन्दजी महाराज

७—पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की संप्रदाय के
कुल मुनि ७, आर्या १६

प्रतिनिधि २-पं० मुनि श्री. हृदयनाथजी म०
(अनुपस्थित), पं० मुनि श्री कर्णयालालजी म०

१८—श्री ज्ञानपुर महावीररायजी मुनि ३, आया २

प्रतिनिधि १—धर्मापदेष्टा पं० फूलचंदजी म०

१९—पूज्य श्री रूपचन्दजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ३, आया ४

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री सुरीलकुमारजी म०

२०—पं० मुनि श्री घालीलालजी म० सा० के मुनि ११

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री समीरमलजी म०
(पंडित पं० प्यारचंदजी म० को प्रतिनिधि दे
दिया था)

२१—पूज्य श्री जीवनरामजी म० सा० की संप्रदाय के
मुनि ३,

प्रतिनिधि १—कवि श्री अमरचंदजी म० के
शिष्य विजयमुनिजी म०

१२-बरवाला संप्रदाय (सौराष्ट्र) के मुनि ३, आर्या १८

प्रतिनिधि १—पं० मुनि श्री चम्पकलालजी म०
कुल उपस्थित संप्रदाय २२, मुनि ३४१,
आर्याजी ७६८ क,
प्रतिनिधि सरवा ५३, अनुपस्थित २,

प्रतिनिधित्व

- १—कोटा संप्रदाय के पं० मुनि श्री रामकृष्णजी म०
सा० ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व
पं० मुनि श्री प्यारबंदजी म० को लिख भेजा ।
- २—कोटा संप्रदाय के मुनि श्री जीवराजजी म० तथा
पं० मुनि श्री हीरामुनिजी न सम्मेलन में होने
वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी है । प्रति
निधि मुनिवर्गों की गोल बैठक श्री कोंकाराह
सैन गुरुद्वल के सेन्ट्रल हॉल में भव्य हुतीया

(१४)

(स० २००६ वैं [३ शनिवार ता० २७-४-५२)
के मध्याह्न ३ बजे में प्रारंभ हुई थी। मंगलाचरण क
बाद कार्यवाही प्रारंभ हुई। इस प्रकार —

शान्तिरक्षक का चुनाव

प्र० १—विचार विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से
यह निर्णय किया गया है, कि सभाका
संचालन करने के लिये शान्तिरक्षक का पद
पूज्य श्री गणेशीलालजी म० एवं व्याख्यान
वाचस्पति सदनलालजी म० को दिया
जाता है।

दर्शक मुनियों की भाषा तथा रिपोर्टोंकी नियुक्ति

प्र० २—विचार विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय
हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप में
रह सकते हैं उन्हें धोतन एवं परामर्श दे

का अधिकार नहीं रहगा और अपवाद रूप में श्री फिरोदियाजी (कॉर्पोरन्स के प्रेसीडेन्ट) भी बैठ सकते हैं ।

सर्वानुमति से यह पास किया जाता है कि, गुजराती की रिपोर्ट खाने के लिये श्री चम्पक मुनिजी म० को एवं हिन्दी रिपोर्ट खाने लिये मुनि आर्षदानजी म० को रिपोर्टर के तौर पर रखा जाये ।

विषय—निर्धारणी का चुनाव

प्र० ३—पूर्ण विचार विमर्श के पश्चात् विषय निर्धारणी कमिटी का सर्वानुमति से पास हो गया और इसके लिये १५ सदस्यों का चुनाव कर लिया गया ।

(१) पू० आनन्द अयिनी म०, (२) पू० हस्तीमलजी म०, (३) प० मुनि प्यारचन्दजी म०, (४) उपा० अमरचन्दजी म०, (५) प० इन्द्रमलजी म०, (६) प० श्रीमलजी म०,

(७) उपा० प्रेमचन्दजी म०, (८) प० मुनि लालचन्दजी म०, (९) प० मुनि सौभाग्य मलजी म०, (१०) मधुकर मुनि मिथीलाल जी म०, (११) प० मुनि सुरील कुमारजी म०, (१२) मरुधर मन्त्री मिथीलालजी म०, (१३) मुनि श्री अम्यालालजी म०, (१४) क्या० बा० मदनलालजी म०, और (१५) प० पुष्कर मुनिजी (ता० २७ रात्रि को पास

कार्य प्रणाली

प्र० ५—जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाराज्य सर्वां उमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रमग पर पहुँच जाय कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाता है तो वे प्रस्ताव बहुमत से पास किये जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य $\frac{3}{4}$ अर्थात् ७५% से लिया जायगा।

मत-गणना

प्र० ५—बहुत विचार-संघर्ष के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि—वोटिंग (मत गणना) प्रत्यक्ष में भी लिये जा सकते हैं ।

एक आचार्य के नेतृत्व में

प्र० ६—बुद्धसाधु सम्मेलन सादरी के लिए निम्न चित्त प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि, अपनी २ सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक पद्धतियों का विलीनीकरण करके, “एक आचार्य के नेतृत्व में एक सघ” कायम करते हैं ।

सर्वानुमति से ता० २८ ४ ५२ मध्याह्न

सघ का नाम

प्र० ७—इस सघ का नाम ‘श्री वर्द्धमान स्थानक बासी जैन मण्डल सघ’ रहेगा ।

सर्व सम्मति से पास ता० २६ प्रातः काल

व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल

- प्र० ८—शासन को सुविधा-पूरक प्रगति देने के लिये और मुख्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक 'व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल' बनाया जाय । —सर्व सम्मति से पास

मन्त्री-मण्डल की संख्या

- प्र० ९—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल के १६ सदस्य होंगे । —सर्व सम्मति से पास

मन्त्री मण्डल का कार्यकाल

- प्र० १०—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा ।—सर्व सम्मति से पास

सत्रसरी पर्य-निर्णय

- प्र० ११—संवत्सरी परामर्शन के विषय में कतिपय सम्प्रदायों में मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे

भावण तथा प्रथम भाद्रपद म संवत्सरी करने वाला जो बहुत पक्ष है, वह पक्ष सच ग्द्वय के हनु 'दो भावण हो तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हो तो दूसरे भाद्रपद म मघत्सरी करना" प्रेम पूर्वक स्वीकार करता है ।

—सर्वसम्मति से पास ता०, ३० शान काल ।

पाक्षिक तिथि निर्णय

प्र० १२—पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये

८ माधुसों की कमेटी बनाई गई —

- (१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२) पूज्य श्री आनन्द श्रियिनी म०, (३) पूज्य श्री हरतोमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री शुक्लचन्द्रजी म०, (५) मुनि श्री कस्तूरचंद जी म०, (६) न्याय्याय श्री अमरचन्द्रजी म०, (७) मरुधर मंत्री श्री मिश्रीलालजी म०, (८) पं० श्री सुशील कुमारजी म० ।

तिथि-निर्णय कैसे ?

प्र० १३—पाक्षिक तिथियों के सम्बन्ध में कमेटी का जो निर्णय हो वो आगामी वर्ष से माना जाय और आगामी वर्ष के पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार में प्रकट हो ।

—सर्व सम्मति से पास

दीक्षा के सम्बन्ध में

प्र० १४—(अ) "भी उद्दमान शानकवामी जैन भ्रमण मंघ" के मनोनीत आचार्य और व्यवस्था पक मंत्री, शास्त्र दृष्टि एवं लोकदृष्टि के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार सभी विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य शिक्षण आदिकी योग्यता का यथोचित निर्णय करें ।

—सर्वसम्मति से पास ता० २-५-५२ प्रा

(ब) भी उद्दमान श्वा० जैन भ्रमण मंघ में :
दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्य

आवण तथा प्रथम भाद्रपद में सबत्सरी
करन वाला जो बहुत पक्ष है, वह पक्ष
सब पक्ष क हंतु 'दो आवण हो तो
भाद्रपद म और दो भाद्रपद हो तो दूसरे
भाद्रपद में सबत्सरी बरना' प्रेम पूर्वक
स्वीकार करता है।

—सर्वसम्मति ही पास ता० दे० प्राप्त रल।

पाक्षिक तिथि निर्णय

प्र० १२—पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिये

—साधुओं की कमेटी बनाई गई —

- (१) पूज्य श्री गणेशीलालजी म०, (२)
पूज्य श्री आनंद ऋषिजी म०, (३) पूज्य
श्री हानीमलजी म०, (४) युवाचार्य श्री
शुक्लचन्द्रजी म०, (५) मुनि श्री कस्तूरचंद
जी म०, (६) उपाध्याय श्री अमरचंदजी
म०, (७) मरुधर मंत्री श्री मिमीलालजी
म०, (८) पं० श्री सुरील कुमारजी म०।

व्यवस्थापक मन्त्री-मण्डल का चुनाव


प्र० १६—व्यवस्थापक मन्त्री मण्डल के १६ मंत्रियों का चुनाव —

(१) प्रधान मन्त्री—५० श्री आनन्दश्यामजी महाराज । महायुक्त मन्त्री—(२) प्र० श्री हस्तीमलजी म० एवं (३) प्र० प्यारचन्दजी म०, (४) प्र० श्री पन्नालालजी म०, (५) मरुधर कुरानी मिश्रीमलजी म०, (६) प्र० श्री शुक्लचन्दजी म०, (७) प्र० श्री किशनलालजी म०, (८) धर्मोपदेष्टा पूरुषचन्दजी म० (९) प्र० श्री प्रेमचन्दजी म०, (१०) प्र० श्री कृष्णचन्द्रजी म०, (११) प्र० श्री घासीलालजी म०, (१२) प्र० श्री पुष्करसुनिजी म०, (१३) प्र० श्री मोतीलालजी म०, (मेवाड़ी), (१४) प्र० श्री समयमलजी म०, (१५) प्र० श्री छगनमलजी म०, (मरुधर), (१६) प्र० श्री महम्मदजी महाराज

—मर्ग सम्पत्ति से प्राप्त ता० ३ प्राप्त

मन्त्री-मण्डल का कार्य-विभाग

प्र० २६—मन्त्री मण्डल का कार्य विभाग —

- | | | | |
|--|-----------------------------|-------------------------------|-----------|
| १ प्रायश्चित्त— | { | प० श्री ध्यानन्ध्रविभी महाराज | |
| " | | " " इम्तीमलजी | " |
| २ दीक्षा— | { | " " समर्थमलजी | " |
| " | | " " मङ्गलमलजी | " |
| ३ सेवा | { | प० श्री शुक्लचन्दजी महाराज | |
| " | | " " किशनलालजी | " |
| ४ धातुमोस | { | " " धारचन्दजी | " |
| " | | " " पद्माक्षान्धजी | " |
| ५ बिहार | { | " " मोतीलालजी | " |
| " | | " " मरुघर मिथीमलजी म० | |
| ६ आक्षेप निवारक— | प० श्री पृथ्वीचन्दजी महाराज | | |
| | मरुघर मिथीमलजी | | |
| ७ साहित्य शिक्षण— | प० श्री घासीलालजी | | |
| प० श्री  मुनिजी | " | " | इम्तीमलजी |

प्रचार—५० श्री प्रेमचन्द्रजी म०, ५० श्री छगन

लालजी म० तथा ५० श्री फूलाचन्दजी म०

नोट —इस म श्री मण्डल का कार्य तीन

वर्ष तक रहगा। यदि मन्त्री मण्डल में कोई मत
भेद हागया हो तो आचार्य भी फैसला करेंगे।
मन्त्री मण्डल यथाशक्य प्रति वर्ष मिले, अगर
न मिल सक तो तीसर वर्ष अवश्य मिलना ही
होगा। कोई म श्री कारणवश नहीं पधार सके
तो अपनी सर्व सत्ता, अधिकार देकर प्रतिनिधि
बनाकर भेज दव। यह मन्त्री मण्डल अखिल
भारतीय श्री वर्द्धमान भ्रमण संघ के शासन का
उत्तरदायित्व वहन करेगा। आक्षेप निवारक
मन्त्री श्री वर्द्धमान स्था० जैन भ्रमण संघ पर
आये हुए आक्षेपों का निराकरण करेगा।

—सर्व सम्मति से पास ता० ५ प्रात

(७७)

आचार्य पद प्रदान विधि

० ११—आचार्य पद चर का रत्न वैशाख शुक्ला

१३ (सं० २८०३) बुधवार को दिन क
११॥ वन अदा की प्रायगी ।

उसके पूर्व सब मुनि 'प्रतिज्ञा पत्र' मय
दातव्य क सैवार रमेंत जो आचार्य पद
पर विराजत हो आचार्य श्री के चरणों में
भेंट कर देंगे ।

—मन्त्री सम्मति से पाग, ता० ५ प्रात करल

संघप्रवेश का प्रतिज्ञा पत्र

प्र० १२—मैं मही सम्प्रदाय व साम्प्रदायिक पद्धतियों
विलीनीकरण करके 'श्री वर्द्धमान स्था० चै०
अमल संघ' में प्रविष्ट होता हूँ । मैं संघ क
व्यवस्थानुसार आचार्य और मन्त्री मंडल
की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूँगा ।

(-२)

मैंने अपने आचार्य, गुरुजन तथा बड़े मुनिराज (प्रवर्तिनी, गुगली तथा बड़ी साध्वी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आज तक मैं लगे हुए नानवे ज्ञानते ममी दोषों की आलोचना कर ली है और छेद पर्यायवाच्य करके आज मरी दीक्षा पयाय की है ।

मरे भविष्य काल के चारित्र्य के समय में भ्रमण सच के आधारों और मंत्रियों एवं गुरुजनों को कोई शंका उत्पन्न होगी तो बड़ सिद्ध होने पर आचार्य श्री और प्रायश्चित्त मंत्री की आज्ञानुसार मैं उनका प्रायश्चित्त करूंगा ।

भ्रमण सच के आधारों और समाचारी का मैं यथायोग्य पालन करूंगा ।

मिति —

दस्तावेज —

(इस प्रतिज्ञा पत्र के अनुसार ही इस नये सच में सबको प्रविष्ट होना चाहिए)

—सर्व सम्मति से पास ता० ४ मातःकाल

(२८)

चातुर्मास की विन्ति

प्र० १२—चातुर्मास संघी विन्ति १२ माघ शुक्ला
१५ तक आचार्य भी के पास भजन देने
आहिण। आचार्य भी उन पर विचार विनी
मय करके फासगुन शुक्ला १५ तक चातुर्मास
मन्त्री के पास भेज देंगे और वैश शुक्ला १३
तक चातुर्मास मन्त्री चातुर्मास की घोषणा
कर देंगे।

—सय सम्मति से पास, ता० ५ प्रातः काल

अमर सय की समाचारी

प्र० १३—घस्ती (मकान) संघ मे—

स्थानक संघी निखैय—

(१) पहले के जितने भी अलग २ सम्प्रदायों
के आशक्तों के घर्म प्यान करने के लो
पंथायती स्थान (मकान) हैं, उनका धर्म,
मात्र में जो भी नाम है, उन सबका

भविष्य में भी आवश्यक संध धर्मध्यान करने के लिए जो स्थान (मकान) बनाएँ, उन सबका नाम "श्री श्वेताम्बर स्थानकवासि जैन स्थानक" रखना चाहिए ।

—सर्व सम्मति में पास तो ० ? मई मात काल

- (२) पहले क सभी धर्म ध्यान करने के स्थान (मकान) जिन २ के अधिकार में हैं व अधिकारी एक वर्ष में व स्थान (मकान) "श्री वर्द्धमान स्थानक वासा जैन आवश्यक संध" को सौंप देवे । भविष्य में भी जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान करने के लिए बनें, व भी इस आवश्यक संध की अधीनता में रहें । पहले क जो ३ स्थान (मकान) एक संध में इस आवश्यक संध को नहीं सौंपे जायेंगे तथा भविष्य में जो स्थान (मकान) पंचायती रूप से धर्मध्यान के लिए बनेंगे वे इस आवश्यक संध के अधीन नहीं होंगे ।

तो तनमें भी बहुत समय मंथ के माधु

माधु नदी छड़ेंगे ।

—सर्व सम्मति से पास था० १ मई प्रात कल

(३) शय्या-तर-रात्रि प्रतिक्रमण से लेकर फिर
आज्ञा वापिस लौटाने तक शय्यान्तरस्थ
स्वीकार किया जाय । आज्ञा लौटाने के
बाद अगर वसी गोंद में रहे तो आठ
प्रहर तक शय्या तर क पर को टाकना
और यदि वस गोंद में बिहार करने
जैसी स्थिति हो तो शय्यान्तरस्थ नहीं
रह जाता ।

—सर्व सम्मति से पास था० ३०-४ ५२ मध्याह्न

(४) कोई पचायती भजन बलेश्वराला हो तो
सरकारीन परिस्थिति का विचार कर
उसमें उतरना नहीं ।

—सर्व सम्मति से पास

(२३) अविरतामी घर अथवा दुकान पर किसी साधु-साध्वी को जाना नहीं। जिसके लिए रुपया आदि दिलाने का संकल्प करना वह उस गृहस्थ पुरुष या स्त्री को साधु साध्वीजी के पास रखे नहीं।

—मय सम्मति से पास ता० २ मई प्रातः काल

(२४) गृहस्थ लोग अपने उत्सव के निमित्त जा समा-मण्डप या मण्डप सैवार करें, उसका समय संघ व्याख्यान आदि के लिए उपयोग में ला सकते हैं।

—मय सम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न

(२५) जिस क्षेत्र में बयोद्वय मन्त्र व शारीरिक कारण से सन्त विराजित हो वहाँ पर विदुषी प्रभाविका सतीजी का आगमन हो गया हो और भी संघ विदुषी सतीजी का व्याख्यान भवण करने के लिए —पुनः

(४५)

१- हो तो वहाँ विराजित सन्तों की अनुमति से अवसर लेकर आश्रयान दे सकते हैं। अवसर देखकर ज्ञान मुनि भी अनुमति देने की उदारता करें।

—सर्व सम्मति से प्राप्त ता० ५ मध्याह्न

१० २८—सम्यक्त्व (ममकृत) देना

सम्यक्त्व देते समय देव के रूप में बीठ राग देव को देव ठीक स्वीकार कराना, पंच महाव्रत, पंच ममिति, ३ गुप्ति का पालन करने वाले को गुरु ठीक स्वीकार कराना, 'अहिंसा परमो धर्म' को धर्म रूप में स्वीकार कराना, अमण सध के आचार्य को धर्माचार्य के रूप में स्वीकार कराना। तीसरे पद में उनका नामोच्चार करना।

—सर्व सम्मति से प्राप्त ता० ४ मध्याह्न

प्र २६—धमण सभ में शामिल करना

१ सावदी सम्मेलन में वृद्ध गुजरात व
मन्थ (बरवाला क अतिरिक्त) नी
पधारे हैं। स्थानकवासी जैन धर्म
एक प्राप्त क मुनियों का अलग रहना
ठक नहीं। यह सम्मेलन हरय स
चाहता है कि, गुजरात, कच्छ, सौरा
सौराष्ट्र क मुनिवर इस भ्रमण सभ में
प्रविष्ट हो जाय। इसके लिए
सम्मेलन यह चाहता है कि,—चातुर्मा
५ बाद स० २००६ क माघ मास तक
गुजर मा तीर्थ सम्मेलन होकर व स
भी वरमान स्थानकवासी जैन भ्रमण
सभ से संपर्कित हो जाय। फॉफरे स
और वृद्ध गुजरात के भावक इसके
लिए पूर्ण प्रयत्न करें।

२. सच से बाहर रहे हुए साधु साध्वियों को सच में प्रवेश कराने का अधिकार दोनों आचार्य (आचार्य-उपाचार्य) और प्रधान मंत्री को दिया जाता है कि, य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाष को देखकर उन्हें सच में प्रविष्ट कर सकते हैं। उस यह समय सच स्वीकार कर सकेगा।

३. जिन जिन सम्प्रदायों के मुनिवर इस सच में प्रविष्ट हुए हैं, वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के सत्त-सुठियों को सच के विधानानुसार सच में प्रविष्ट कराने का पथाशीघ्र प्रयत्न करें।

—सब सम्मति से पास ता० ५ मध्याह्न

प्र० ३०—पारस्परिक व्यवहार —

श्री वर्द्धमान स्थानकवामी जैन भ्रमण संघ में प्रविष्ट होने वाले मुनियों के पारस्परिक

११ संभोग (व्यवहार) करजियात
(चुले रहगे) और बारहवों आहार
करने का गरजियात (ऐच्छिक) होगा

—सर्वसम्मति से पास ता० ४१

प्र० ३१—भावक संघ को चेतावनी.—

जो संघ सामूहिक रूप से इस भ्रमण से
क नियमों को बार बार तोड़ेंगे, तो वह
चातुर्मास नहीं करना चाहिए । शेषका
का आगार ।

—सर्वसम्मति से पास ता० ४ मध्याह्न

प्र० ३२—आमार प्रदर्शन व धन्यवाद

१ सादकी साधु सम्पन्न म जो जा
आचार्य, युवाचार्य, उपाध्याय, स्व
विर आदि मुनिराज सम विहार करके
अनेक परिपक्वों को सहन करते
पधारे हैं और वही

1 सम्मेलन की सफल बनाया है इसलिये
व सब धन्यवाद के पात्र हैं।

2. आचार्य, युवाचार्य, उपोप्याय, प्रब-
तक आदि २ सदस्यों का सच ऐक्य
क लिए चिन = मुनिराजों ने विनीनी
करण किया है, एतदर्थ वे सब धन्य
वाद के पात्र हैं।

3. शांति-मरक्षक आचार्य श्री गणेशी
हालजी म० सा० और व० रत्न श्री
मदनजालजी म० सा० के नेतृत्व में
यह साधु सम्मेलन व्यवस्थित रूप से
सफल हुआ है नमक लिए हम सब
प्रतिनिधि मुनि हृदय से आभारी हैं।

4. साधु सम्मेलन निषेधक समिति के
सम्प्री श्री धीरवमाह के० तुरसिया ने
साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में जो
प्रयत्न किया है और उनके इस शुभ

(५०)

कार्य में जिन २ महाशयों ने सहयोग दिया है उन सभका यह साधु सम्मेलन सहर्ष नोप लेता है।

—सर्व सम्मति से पास ता० ६-५-५२

प्र० ३३—रुगत कामना —

१ हम सब उपस्थित प्रतिनिधि मुनि
हृदय से यह कामना करते हैं कि यह
वृत्तसाधु सम्मेलन सफल हो, साधु
साध्विया के लिए ज्ञान, दर्शन, पाणित्र
में वृद्धकारक हो, सर्वत्र प्रेमपूर्वक
एकता का साम्राज्य स्थापित कर
पाता वनें ऐसी हम कामना करते हैं
आत्म साची से हम सब अपने वचन
पालन में सुदृढ़ रहें। ।

—सर्वसम्मति से पास ता० ६-५-५२

मंगल पाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई ।

ॐ शान्तिः ! शान्ति ॥ शान्ति ॥

ता० ६५५२ को सर्वानुमति से अमण मध का विधान और शोक प्रस्ताव पास हुए थे वे परिशिष्ट न० १२ में दिये हैं । सान्दी में उपस्थित साधु-माधियों का नामावली परिशिष्ट ३ में दी है ।

अतः मैं 'भ्रात्रक सभा' का बहन्व्य निर्देश है सं मध-देश की पुष्टि के लिये भावक मध के लिये आवश्यक बताया है ।

वाट — श्री माधु सम्मेलन की कार्यवाही का १ कच्चा नोट हमें मिला उस पर से यह प्रव शन किया गया है । इसमें किसी भी प्रव की जुनी रह गई हो तो सूचना मिलने द्वितीयावृत्ति में संशोधन किया जा सकेगा ।

परिशिष्ट—१

॥ ॐ अहन् ॥

श्री वर्द्धमान स्या जैन श्रमण संध का विधान

उद्देश्य — वर्द्धमान स्या जैन समाज में भिन्न २ सम्प्रदायों का अस्तित्व है । इन सम्प्रदायों में प्रचलित भिन्न २ परम्परा और समाचारी में एकता लाकर समस्त सम्प्रदायों का एकीकरण करना, परस्पर में प्रेम और ऐक्य की वृद्धि करना सयम मार्ग में आई हुई निश्चितियों को दूर करना और एक आचार्य के नेतृत्व में एक और अनिमाज्य 'श्रमण संध' बनाना ।

नाम—इस संध का नाम 'श्री वर्द्धमान स्यानकवासी जैन श्रमण संध' रहेगा ।

कार्यक्षेत्र—'श्री वर्द्धमान स्यानकवासी जैन श्रमण संध' का कार्यक्षेत्र इस प्रकार रहेगा—

- १-आत्म शुद्धि के लिये अज्ञा, प्रत्यक्षा में एकता और चारित्र्य में शुद्धता एवं वृद्धि करना तथा शिथिलाचार एवं स्वच्छन्दाचार रोकना ।
- २-समस्त साधु साध्वियों को सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यरस्था करना ।
- ३-आगम-साहित्य का संशोधन व भाषान्तर करना तथा जैनधर्म के प्रचार के लिये दक्षि-धर्मक तथा साहित्य निर्माण करना ।
- ४-वार्त्तिक शिक्षण में वृद्धि हो ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना ।
- ५-जैन तत्त्वज्ञान का व्यापक प्रचार करना ।
- ६-चतुर्विध श्री सघ में जेय्य बढ़ाने के प्रयत्न करना ।

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ में
प्रविष्ट होने की विधि

- १-प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु साध्वीजी को अपनी अपनी सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक

विलीनीकरण करके (त्याग कर) उस संघ में प्रविष्ट होने या प्रतिज्ञा-पत्र मरना पड़ेगा ।

९-अपने गुरुजनों अथवा बड़े मुनिराज (ता-गीजी) के समक्ष शुद्ध हृदय से आलापना करके छद्म पर्याय कर्म परके यमण संघ में प्रविष्ट हाते समय पूर्व दीक्षा पथाय माफी जायगी ।

— — —

साधु-साध्वीजी को मध में प्रवेश होते समय का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं यही सम्प्रदाय, एवं साम्प्रदायिक पद्धतियों का रिक्त-
कीलकण करके 'श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन धर्मण संघ'
में प्रविष्ट होता हूँ । मैं संघ के संशरण अनुसार आचार्य
और मन्त्री मण्डल की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करूंगा ।

मैंने अपने आचार्य, गुरुजनों, तथा बड़े मुनिराज
(प्रवर्तिनी, गुरमणी, बड़ी साध्वी) समक्ष शुद्ध हृदय से
आज तक मैं लगे हुए जानते अजानते सभी दीयों की
आलोचना करली है और छेद पयाय वाद करते आज
मेरी दीक्षा पयाय - - - - - दी है ।

मत्रियों, गुरुजनों तथा धर्मण संघ के आचार्य
श्री को मेरे भविष्यकाल के चरित्र के सम्बन्ध में कोई
शंका उत्पन्न होगी उसका प्रायश्चित्त करूंगा ।

धर्मण-संघ के धधारण और सम्पादकी का मैं
यथायोग्य पालन करूंगा ।

ता - - - १९२७ हम्नाक्षर - - -

बंधारण

श्री 'वर्द्धमान स्या० जैन धर्मण संघ' का बंधारण निम्न प्रकार का होगा :—

१-इस धर्मण संघ के 'एक आचार्य' रहेंगे जिनकी नेमाय में संघ के सब साधु-साध्वी रहेंगे ।

२-आचार्यश्री अतिउच्च हो अथवा कार्य में अक्षम हो ता मंत्री मंडल 'उपाचार्य' नियुक्त करेंगे और उपाचार्यजी आचार्यजी के सब अधिकार सम्हालेंगे ।

३-आचार्यश्री की अनुपस्थिति में मंत्री में से एक आचार्य की नियुक्ति करेगा ।

४-शासन की सु-वास्था के लिये तथा आचार्यश्री की मददरूप होने के लिये आचार्यश्री की इच्छा के अनुसार पुजब की संख्या का एक मंत्री मण्डल होगा जो आचार्यश्री की आज्ञा अनुसार कार्य करेंगे । मंत्री मण्डल बनाते समय आचार्यश्री मुख्य २ भुनिराजों की सलाह लेंगे ।

५-मन्त्रियों के रिक्तस्थान की पूर्ति आचार्य श्री की सलाह अनुसार मन्त्री-मण्डल कर सकेगा ।

६-मन्त्रीमण्डल की संख्या घटाने बढ़ाने की और कार्य विभाग में आवश्यक फारफेर करने की सलाह आचार्य श्री को होगी ।

७-मन्त्रीमण्डल को आवश्यक विभाग सिपुर्द किये जायेंगे । मन्त्रीमण्डल में १ प्रधा मन्त्री और प्रधान मन्त्री की इच्छानुसार २ सहायक मन्त्री होंगे ।

८-प्रधान मन्त्री, सहमन्त्रियों के सहयोग से मन्त्री-मण्डल के कार्य की देखभाल करेंगे तथा समय २ पर आवश्यक समाचार आचार्य श्री का दते रहेंगे । आचार्य श्री की आज्ञा और सूचनाओं को मन्त्रीमण्डल कार्यान्वित करेंगे ।

९-मन्त्रीगण एक से अधिक विभाग सम्भाल सकेंगे तथा संयुक्त विभाग की जवाबदारी ले सकेंगे

१०-आचार्यश्री यादजीवन क लिये

११-मन्त्रीमण्डल का कार्यकाल ३ वर्ष का रहेगा ।
तीन वर्ष के बाद आचार्य श्री मन्त्रीमण्डल चुनेंगे । उस
समय मुख्य मुनिभरों की सलाह लेंगे ।

पसदगी

१-आचार्यजी की पसदगी मन्त्रीमण्डल करेंगे ।
उनके निवासस्थान पर मन्त्रीमण्डल नई नियुक्ति कर
सकेंगे ।

२-मन्त्रीमण्डल की समावधानसमय प्रतिवर्ष
अथवा तीन वर्ष में अवश्य होगी ।

३-बृहत् साधु सम्मेलन प्रति ५ वर्ष में अथवा
७ वर्ष में तो अथवा आचार्यजी की मन्त्रीमण्डल के
परामर्श से करावेंगे ।

कायप्रणाली—यथा सभ्य समाजों का कार्य
सर्वानुमति से होगा । बहुमत का प्रसंग आए तो ३ बहु-
मत से अर्थात् ७५/१०० होगा ।

आचार्यश्री का वर्चस्व और अधिकार

१-साधु साध्वियों के चातुर्मास के लिये श्री संधों से जो निमित्त पत्र आवेंगे उसपर अपनी सूचनाएं देंगे और प्रधान मंत्री के द्वारा चातुर्मास मंत्री का योग्य रहने के लिए भिजवायेंगे ।

२-मंत्रीमंडल और प्रधान मंत्री के कार्य की देखभाल करेंगे, और योग्य आज्ञा व सूचनाएं प्रधान मंत्री को भेजेंगे ।

३-शेष काल और चातुर्मास में साधु साध्वियों का लाभ अधिक क्षेत्रों को मिले, धर्म का अत्यधिक प्रचार हो, ऐसी व्यवस्था प्रधान मंत्री द्वारा करावेंगे ।

४-साधु-साध्वियों के ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य का यदि हेतु श्रद्धा, प्ररूपण की पक्का हेतु और चतुर्दिक्षु श्री संध का उत्थान एवं कल्याण हेतु यथायोग्य करते रहेंगे ।

५-अमल संघ के सब साधु साध्वी पर आचार्य श्री का अधिकार होगा तथा दीक्षार्थियों की योग्यता देखकर दीक्षा की आज्ञा देंगे ।

६-अमल संघ से बाहिर के साधु साध्वियों को तथा संघ में मिलने की इच्छा रखने वाले अन्य साधु तार्थियों को यथाविधि मिलाने का अधिकार आचार्य श्री को होगा ।

७-प्रधान मंत्री और मंत्री मण्डल के कार्य को सुचारु चलाने और शासन की सु व्यवस्था के लिए आज्ञा व सूचना दे सकेंगे ।

उपाचार्य के अधिकार एवं कर्त्तव्य

१-आचार्य श्री जितनी २ सत्ता और अधिकार देंगे तदनुसार अधिकारपूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन सम्हालेंगे ।

मन्त्री मण्डल के कर्त्तव्य एवं अधिकार

१-योग्यतानुसार सुपूर्द किये हुए विभागों के । और उन्नति बनाने के लिए साधु साध्वियों

१-आज्ञा और सूचना देते रहना आवश्यक है ।

२-परस्पर मंत्रियों से सहकारपूर्ण कार्य करना ।

३-आचार्य श्री और प्रधान-मन्त्री की आज्ञा एवं सूचनाओं का पालन करना करना ।

४-अपनी कार्यवाही और गति विधि से प्रधान मन्त्री तथा आचार्य श्री को सुपरिचित रहना ।

प्रधानमन्त्री का कर्तव्य और अधिकार

१-आचार्य श्री या उपाचार्यश्री की आज्ञा और सूचनाओं का पालन करना और मंत्रियों से करना ।

मन्त्रीमण्डल के कार्य पर देखभाल रखना, उचित आज्ञा सूचनाएं एवं परामर्श मंत्रियों को देते रहना ।

२-सहमंत्रियों से परामर्श लेते रहना ।

३-मन्त्रीमण्डल के कार्य से सुपरिचित रहना और मण्डल की गतिविधि से आचार्यश्रीजी को तथा उपाचार्यश्रीजी को सुपरिचित रहना ।

सहमन्त्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-प्रधान मन्त्री का हर कार्य में सहयोग देंगे ।

२-अपने विभाग का उत्तरदायित्वपूर्ण समालोचना ।

मन्त्री का कर्त्तव्य और अधिकार

१-मन्त्रियों के सुपुद् अपने २ विभाग को सुचारु रूप से चलाया ।

२-साधु-साधिवर्ग के साथ प्रेमपूर्ण नीति से आलापन करना ।

३-अपने सहकारी मन्त्रियों के साथ रोहपूर्वक कार्य संचालन करने में सहयोगी बनाया ।

४-अपने कार्य की गति विधि से प्रधान मन्त्रीजी को सुपरिचित रहना ।

५-आचार्यजी और प्रधान मन्त्रीजी की आज्ञा और सूचनाओं का यथायोग्य पालन करना, करना । विधान में योग्य संस्थापन करने की सच्चा आचार्य जी को

आचार्य श्री मन्त्रीमंडल की सरलाह ले ।

प्रायश्चित्त और पृथक्करण

उत्तरगुप्त सयरी छोट अपराधों का प्रायश्चित्त साधु साध्वियों साथ में विचारन वाले बड़े साधु साध्वी दे सकेंगे । उत्तरी सूचना प्रायश्चित्त मन्त्री का दी जायगी ।

बड़े (महाव्रत भंग) के अपराधों का प्रायश्चित्त मन्त्री द्वारा होगा । जितनी सूचना प्रधानमन्त्री और आचार्य की को दता होगा । चतुष्पदभंग के प्रत्यक्ष अपराध का प्रायश्चित्त प्रधानमन्त्री और आचार्य श्री की सलाह से होगी ।

हिंसा मन्त्री के अपराध हो तो प्रधानमन्त्री द्वारा आचार्य श्री की सम्मति से प्रायश्चित्त होगा ।

प्रधान भंगी का अपराध हो तो आचार्य श्री द्वारा प्रायश्चित्त होगा ।

आचार्य श्री के प्रायश्चित्त तबन उपस्थित

(६४)

प्रायश्चित्त का निश्चय न होने तक अपने साथ के साधु-साध्वी का आहार या चन्दना सम्बन्ध विच्छेद किया जा सकेगा । उसकी सूचना प्रायश्चित्त मन्त्री को दी जानी चाहिये ।

आचार्यद्वी और प्रधान मन्त्री का आता बिना किसी साधु साध्वी को कोई पृथक् नहीं कर सकेगा ।
सर्वांनुमति से पाम ताः ६५४०



शोक प्रस्ताव

अजमेर छात्र सम्मेलन के परचासु हमारे धर्म के निम्न सितारे देवलोकवासी हो गये हैं। उनका वियोग से यह सम्मेलन हार्दिक दुःख प्रदर्शित करता है, उनकी आराम शान्ति चाहता है और उनके सत परिवार तथा साथी परिवार के साथ समवेदना प्रकट करता है।

१ पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज

२ " " मन्नालालजी "

३ " " मोहनलालजी "

४ " " काशीरामजी "

५ " " मणिलालजी "

६ प मुनि श्री मूलचन्दजी " (बोटाव)

७ पूज्य श्री विनयचन्दजी "

८ " " लवाहरलालजी "

९ " " स्वयचन्दजी "

१० " " उत्तमचन्दजी "

११	शतावधानी	रत्नचन्द्रनी	म०
१२	जैनदिवाकर	चौधमलजी	"
१३	५ मुनि श्री	केशरीमलनी	"
१४	पूज्य श्री	अमोलकश्रविजी	"
१५	" "	देवश्रविनी	"
१६	" "	गुलाश्वदजी	"
१७	गणेश श्री	उदयश्वदजी	"
१८	पूज्य श्री	मोतीलालनी	"
१९	५० "	हृष्यचन्द्रजी	"
२०	मुनि श्री	गणेशमलजी	"
२१	५ मुनि श्री	जैनमलनी	"
२२	मुनि श्री	मोतीलालजी	"
२३	प्रवर्तक श्री	ताराचन्द्रजी	"
२४	स्थविर मुनि श्री	फकीरश्वदजी	"
२५	प्रवर्तक श्री	धीरजमलजी	"
२६	मुनि श्री	कुन्दनजालजी	"
२७	५ मुनि श्री	बोधराजजी	"
२८	" "	मोक्षराजजी	"

२६	मुनि श्री	कदैयालालजी	म०
२७	" "	प्रेमश्रुपित्री	"
२८	तपस्वी	चम्पकश्रुपित्री	"
२९	पं मुनि श्री	नंदलालजी	"
३०	तपस्वी श्री	हजारीमलजी	"
३१	पं मुनि श्री	हजारीमलजी	"
३२	मुनि श्री	दाम्प्य दनी	"
३३	तपस्वी मया मातो	मोदीलालजी	महाराज
३४	"	वेशीमलजी	महाराज
३५		छत्रालालजी	"
३६	"	पौयमलजी	"
३७	"	मोदीलालजी	"
३८	"	पौजमलजी	"
३९	मुनि श्री	बछरानजी	"
४०	तपस्वी श्री	सुन्दरलालजी	"
४१	रथविर	लालपदजी	"
४२	गणेशचन्द्रेक	छोटेलालजी	"

૪૬	ગણાવન્દેદક	અચરામની	મ૦
૪૭	"	મોહુલચંદજી	"
૪૮	"	ચનવારીલાલજી	"
૪૯	પ્રવર્તક બી	સાલગરામની	"
૫૦	"	સમ્રાજ્ઞીરામબી	"
૫૧	ચદુસૂત્રી	ન યુવાલજી	"
૫૨	વ મુનિ બી	ગોવિંદરામજી	"
૫૩	મહાતપસૂત્રી	નારાયણદાસજી	"
૫૪	પ્રવર્તક બી	વજોદીમલજી	"
૫૫	"	ચાલણ દગી	"
૫૬	મુનિ બી	દેવરાજજી	"
૫૭	પ્રવર્તિની બી	વાર્ધતીજી	"
૫૮	"	રાજકવરજી	"
૫૯	"	આનંદકવરજી	"
૬૦	"	સુગનઠકવરજી	"

આદિ સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ, પ્રવર્તિનીજી મહા
સતિધોની પણ અન્ય મતિયાંજી મહારાજ ।

સર્ગાનુમતિ તે પાલ તા. ૬ ૫ ૫૧

परिशिष्ट—३

श्री बृहत्साधु सम्मेलन, सादही में उपस्थित
— मुनियों की नामावली —



१ पूज्य श्री आत्मारामजी म सा की संप्रदाय के मुनि २०

उपाध्याय श्री प्रेमचन्दजी म० के साथ ६ सत्त

(१) उपा० श्री प्रेमचन्दजी म०

(२) मुनि श्री वाशारीलालजी म०

(३) " " तुलसीजी "

(४) " " शान्तिलालजी "

(५) " " सीमाग्यमुनिजी "

(६) " " धर्मवीरजी "

युवाध्याय श्री शुक्लचन्द्रजी म० के साथ ८ सत्त

१ युवा० श्री शुक्लचन्द्रजी म०

२ तपस्वी श्री सुदर्शनजी ,

३ " राजेन्द्र मुनिजी म०

४ " सुरेन्द्र " "

- ५ श्री हरिश्चन्द्रजी म०
 ६ " महेन्द्र मुनिजी "
 ७ " जगदीशचन्द्रजी "
 ८ " सुमन मुनिजी "

छया० वा० पं० मुनि भी मदनलालजी म० के साथ
 ४ सन्त

- १ पं० मुनि भी मदनलालजी म०
 २ " " मूलचन्द्रजी म०
 ३ " " फूलचन्द्रजी म०
 ४ " " रामचन्द्रजी म०

वक्ता पं० विमल मुनिजी म० के साथ २ सन्त

- १ वक्ता पं० मुनि श्री विमलचन्द्रजी म०
 २ " " दर्शन मुनिजी "

२ पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० की सम्प्रदाय
 मुनि ??

- १ पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा०
 २ तपस्वी नन्दलालजी , "

३ ६० मुनि भी भीममञ्जी म० सा०

४ ॥ ॥ चतुरभिहञ्जी ॥ ॥

५ ॥ ॥ सुंदरलालञ्जी ॥ ॥

६ ॥ ॥ नानालालञ्जी ॥ ॥

७ ॥ ॥ रामरमञ्जी ॥ ॥

८ ॥ ॥ भाईशाञ्जी ॥ ॥

९ ॥ ॥ हृष्ट २वी ॥ ॥

१० ॥ ॥ हनुमानमञ्जी ॥ ॥

११ ॥ ॥ होतारामजी ॥ ॥

१ ६५ भी आनन्दश्रुपित्री म० सा० श्री सम्प्रदाय के
मुनि ८

१ ६५ भी आनन्दश्रुपित्री म० सा०

२ ॥ भी अलमश्रुपित्री ॥ ॥

३ ॥ हरि भी हरिश्रुपित्री ॥ ॥

४ ॥ ॥ मोतीश्रुपित्री ॥ ॥

५ ॥ ॥ मानुश्रुपित्री ॥ ॥

६ ॥ ॥ असवन्तश्रुपित्री ॥ ॥

७ श्री पुष्पश्रयिनी म० सा०

८ " हिम्मतश्रयिनी "

४ पुज्यश्री रूचन्दजी म० सा० की संप्रदाय के मुनि २५

५० मुनि श्री किस्तूरचन्दजी म० के साथ सन्त ४

१ पं० मुनिश्री किस्तूरचन्दजी म०

२ " बद्धमानजी "

३ " पन्नालालजी "

४ " हरियाच मुनिजी म०

५० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० के साथ सन्त १२

१ श्री बड़े नाथूलालजी म० सा०

२ पं० श्री प्यारचन्दजी "

३ " मनोहरलालजी म०

४ " पन्नालालजी "

५ " चन्दनमलजी "

६ तपस्वी भेषराक्षणी "

७ श्री मूलचन्दजी "

८ " अशोक मुनिजी "

१ तपस्वी माण्डूक्य-द्रुजी म०

१० " गणेश मुनिजी ,,

११ " मोहन मुनिजी ,,

१२ " उदय मुनिजी ,,

पूज्य श्री सेवमलजी म० के साथ स त ६

१ पूज्य श्री सेवमलजी म०

२ मुनि श्री चम्पालालजी म०

३ " मिश्रीमन्त्री ,,

४ " राजमलजी ,

५ " ईश्वरचन्द्रजी ,,

६ " पारममन्त्री ,,

प० मुनि श्री नाथूलालजी म० के साथ स त १६

१ श्री नाथूलालजी म० २ श्री रामलालजी म०

३ ,, मोहनमुनिजी , ४ ,, मोहन मुनिजी म०

५ ,, हुक्मीचन्द्रजी , ६ ,, बसन्तीलालजी ,,

७ ,, विमल मुनिजी म० ८ ,, सागरमलजी

- ६ ,, देवमुनिजी म० १० ,, अजित मुनिजी ,,
 ११ ,, प्रेम मुनिजी ,, १२ ,, बाल मुनिजी ,,
 १३ भी चमन मुनिजी म०

५. पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की संप्रदाय के मुनि ६

१ पं० मुनि श्री लौनाथ्यमन ना म०

२ ,, मय्यमुनिजी ,,

३ ,, केवल मुनिजी ,

४ ,, मथुरा मुनिजी ,

५ ,, सागर मुनिजी ,

६ ,, सुरद्र मुनिजी ,,

६—पूज्य श्री ज्ञानचंद्रजी म० सा० की संप्रदाय के संत ४

१ आत्मार्य भी इन्द्रमलजी महाराज

२ ,, लालच द्रजी ,,

३ ,, मोहनलालजी ,,

४ ,, रामचंद्रजी ,,

७—पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की संप्रदाय के संत ६

१ पूज्य भी हस्तीमलजी महाराज

२ मुनि श्री लक्ष्मीच द्रौजी महाराज

३ „ लामच द्रौजी „

४ „ चौथमलजी „

५ „ माणकमुनिजी „

६ „ रत्न मुनिजी „

८—दूच श्री शतिलालजी म० गा० की सम्प्रदाय के
सन्त ५

१ मुनि श्री भूरालालजी महाराज

२ „ छोगालालजी „

३ „ गोकुलच द्रौजी „

४ „ मोहनलालजी „

५ „ वरदीच द्रौजी „

९—दूज्य श्री मोतीलालजी म० (मेराठी) की सम्प्रदाय के
सन्त ८

१ मुनि श्री अम्बालालजी महाराज

२ „ शांतिनाथजी „

३ „ इन्द्रमलजी „

४ „ सौभाग मुनिजी „

१०—पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त ३

१ उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी महाराज

२ मुनि श्री विनय मुनिजी ,,

३ ,, सरोज मुनिजी ,,

११—पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० के

स्यविर भी हनारीमल्लजी म० सा० के सन्त -

१ मुनि श्री ब्रजनाथजी महाराज

२ पं० मुनि श्री मिश्रीलालजी ,,

१२—पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० के

पं० मुनि श्री चौधमल्लजी म० सा० के सन्त ३

१ पं० मुनि श्री चौधमल्लजी महाराज

२ ,, ,, लालचन्द्रजी ,,

३ उपाध्याय श्री जीतमल्लजी ,,

१३—पूज्य श्री नानकरामजी म० सा० के सम्प्रदाय के

प्रवक्तक श्री पद्मलालजी म० सा० के सन्त ३

१ मुनि श्री हगामीलालजी महाराज

२ ,, सोहनलालजी ,,

१४—पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त ७

- १ मन्त्री मुनि श्री ताराच दत्ती महाराज
- २ मुनि श्री नारायणदासजी ॥
- ३ ॥ प्रतापमलजी ॥
- ४ ॥ पुष्कर मुनिजी ॥
- ५ ॥ हीरा मुनिजी ॥
- ६ ॥ देवेन्द्र मुनिजी ॥
- ७ ॥ गणेश मुनिजी ॥

१५—पूज्य श्री रत्ननाथजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त २

- १ मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज
- २ मुनि श्री रूपचन्द्रजी ॥

१६—पूज्य श्री चौधमलजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त २

- १ प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंहजी म०
- २ मुनि श्री रूपचन्द्रजी ॥
- ३ ॥ केवलचन्द्रजी ॥

१७—पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त हैं

१ प० मुनि श्री कटैयालालजी म०

२ " मिश्रीलालजी "

१८—ज्ञातपुत्र महावीरसंघीय सन्त हैं

१ घमौरदेष्टा भी कृष्णराजजी म०

२ मुनि भी सुमित्र देवजी "

३ " जिनघराजजी "

१९—पूज्य श्री रूपचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के
सन्त हैं

१ स्व० मुनि श्री छोगालालजी म०

२ " प० सुरील कुमारजी म०

३ " सौभाग्य मुनिजी "

२०—प० मुनि श्री घासीलालजी म० सा० की सम्प्र-
दाय के सन्त हैं

१ प० मुनि श्री समीर मुनिजी म०

२ तपस्वी श्री भोगीलालजी म०

१—कवाला सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के सन्त २

१ प० मुनि श्री चम्पकलालजी म०

२ मुनि श्री अमर मुनि म०

—उपस्थित आर्याणी की शुभ नामावली—

—श्री ऋषि सम्प्रदाय की सतियों २३

१ प्रवर्तनी श्री रतनकु वरजी म०

२ महासतीजी श्री सिरेंकु वरजी म०

३ ,, लक्ष्माकु वरजी ,

४ ,, अमरावकु वरजी ,,

५ ,, रमाजीकु वरजी ,,

६ ,, फेरारकु वरजी ,

७ ,, वस्तमकु वरजी ,,

८ ,, हुलामकु वरजी (बडा)

९ ,, भीमतीजी म०

१० ,, सत्रनकु वरजी ,

११ ,, सोहनकु वरजी ,

- १२ ॥ सुमतिकु वरजी ॥
 १३ ॥ पानकु वरजी ॥
 १४ ॥ सूरजकु वरजी (बड़ा)
 १५ ॥ सूरजकु वरजी (छोटा)
 १६ ॥ गुलाबकु वरजी (बड़ा)
 १७ ॥ नवलकु वरजी म०
 १८ ॥ गुलाबकु वरजी (छोटा)
 १९ ॥ दयाकु वरजी म०
 २० ॥ गुमानकु वरजी म०
 २१ ॥ हुजासकु वरजी छोटा म०
 २२ ॥ कुशानकु वरजी ॥
 २३ ॥ बदनकु वरजी ॥

२-श्री धमदासजी म० सा० का संप्रदाय की सतिया १२

- १ श्री चाँदकु वरजी म०
 २ ॥ कल्लमकु वरजी ॥
 ३ ॥ कल्लमकु वरजी ॥ छोटा
 ४ ॥ कु दनकु वरजी ॥

५	श्री	मदनकु वरजी	म०
६	,,	मनोहरकु वरजी	,,
७	,,	मोहनकु वरजी	,,
८	,,	मगनकु वरजी	,,
९	,,	सोरावरकु वरजी	,,
१०	,,	शक्तिकु वरजी	,,
११	,,	चन्दनकु वरजी	,,
१२	,,	गुमानकु वरजी	,,

३—शुभ श्री जयसिंहजी म० सा० की संप्रदाय की

सतियों १५

१	श्री	मरजनकु वरजी	म०
२	,,	सौभाग्यकु वरजी	,,
३	,,	कचनकु वरजी	,,
४	,,	सहरकु वरजी	,,
५	,,	शंभुकु वरजी	,,
६	,,	शीलकु वरजी	,,
७	,,	रामुकु वरजी	,,

(८२)

८	श्री	मोहनकु वरजी	म०
६	"	वरनभकु वरजी	"
१०	"	सुगनकु वरजी	"
११	"	सायरकु वरजी	"
१०	"	कौशल्याकु वरजी	"
१३	"	दयाकु वरजी	"
१४	"	घसुकु वरजी	"
१५	"	विमलकुमारीजी	"

४—पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की संप्रदाय की सतियों ४

१	श्री	नसकु वरजी	म०
२	"	सुगनकु वरजी	"
३	"	गुलाबकु वरजी	"
४	"	मौमागकु वरजी	"

५—पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० की संप्रदाय की सतियों ४

१	श्री	मौमागकु वरजी	म०
---	------	--------------	----

(८३)

२	श्री	प्रेमकु वरजी	म०
३	"	सजनकु वरजी	"
४	"	प्रभावतीजी	"

६—प्रयत्ती श्री रंगूजी म० की संप्रदाय की सतिया ५

१	श्री	सौभागकु वरजी	म० बड़ा
२	श्री	सौभाग कु वरजी	म० छोटा
३	श्री	टीपूकु वरजी	म०
४	श्री	नगी १० वरजा	म०

कुल सतिया ६२

परिशिष्ट—४

गृह्य साधु सम्मेलन में हुए भ्रमण संघ को
 — स्थायी और सुदृढ़ बनाने के लिए —
 आवश्यक संघ का कर्तव्य



१—साधु सम्मेलन में जो 'संघ देख्य' का कार्य हुआ है उसको गृह्य बनाने के लिए मध्यत्र आवश्यक संघ आवश्यक कार्य करते रहे और कर्तव्य पालन की ओर खास लक्ष्य रखें ।

२—घात तक चली आई साम्प्रदायिक दृष्टि और वैमनस्य को मिटाना, साम्प्रदायिक मंडल और समितियों बंद करके अगस्ट ऐक्ट का प्रतीक 'श्रीवद्वमान स्था० जैन भ्रमणोपासक (भाषक) संघ' को स्थान २ पर स्थापना करना ।

इस प्रकार नगर, प्रांत और केंद्रीय आवश्यक संघ की स्थापना करना ।

३—स्वा० जैन समाज की ज्ञान संस्थाएँ (विद्यालय छात्रालय परीक्षा बोर्ड, पुस्तकालय आदि २) जहाँ ० चलती हो उसका संचालन किसी एक भूत सम्प्रदाय के द्वारा न होकर समस्त स्वा० जैन श्रावक सदस्यों द्वारा होता रहे। उसका मूल नाम भले ही कायम रह, परन्तु उस पर 'वर्द्धमान स्वा० जैन सघ द्वारा संचालित' ऐसा बोर्ड पर लिखा जाना चाहिए।

४—आज तक के घम ध्यान करने के लो २ मकान हैं और होंगे, वे सब 'श्री वर्द्धमान स्वा० जैन श्री सघ के सुपुर्द कर देना चाहिए।' स्थानीय सघ उसकी सघ प्रकार की व्यवस्था करेंगे। ऐसे सघ मकानों के नाम 'श्री रवे० स्वा० जैनस्थानक' रटे जावें।

५—साधु-साध्वियों के विकल्प मिटाकर प्रतिष्ठा पत्र भरवाना। श्री वर्द्धमान स्वा० जैन सघ सघ में नहीं भिन्न हुए साधु साध्वियों को मिलाने का प्रयत्न करना और सम्मिलित साधु साध्वियों में कोई वैमनस्य हो जाय तो जिन २ को याद करें उनको इशारा

पात ही उपस्थित होकर सुमेक स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न करना ।

६—चातुर्मास में शिट्ट-मण्डल बना कर प्रकाश करना, मतभेद मिटाकर प्रमपूर्ण सघ व्यवस्था करना ।

७—चातुर्मास में विराजित मुनिवरों द्वारा होने वाली सब प्रकार की प्रवृत्तियों की रिपोर्ट आचार्यभी, दवावाय भी या प्रधान मन्त्रीजी का सदा में लिख भजना, जिसको आचार्य या की आज्ञानुसार विरोपाक द्वारा प्रकट का जावे ।

८—चातुर्मास की बिनती माघ शुक्ला १५ तक आचार्य भी की सेवा में भेजना और अपने क्षेत्र के लिए जिन साधु या माभ्यजी का चातुर्मास क्षेत्र शु० १३ तक चातुर्मास मन्त्रीजी घोषित करें उन पर सतोष मानकर चातुर्मास में बिराजन वाल साधु साभ्यजी की बहुमानपूर्णक सेवा भक्ति करना ।

९—सघ का प्रचार कार्य हर प्रकार से ऐसा करना चाहिए कि गाँव २ में और घर २ में सब की आवाज व जानकारी पहुँच जाय ।

१०—गूर्जर प्रान्तीय साधु सम्मेलन तथा महा सतियों का प्रान्तीय सम्मेलन इस चातुर्मास के बाद यथाशीघ्र कराने का प्रयत्न करना । सतियों के प्रान्तीय सम्मेलन में निकट के मुख्य २ मुनिवरों को बुलाना, जो परामर्श और मार्गदर्शन देंगे ।

११—आपक गण “साम्प्रदायिक नेतृत्व को न समझें और धर्म सेवा की भावना से कार्य करें।” सब पत्र-व्यवहार द्वारा प्रधान मन्त्रीजी, आचार्य श्रीजी और उपाचार्य श्रीजी को सब आवश्यकताओं में जानकार रखते रहेंगे ।

‘सप्त ऐक्य’ को स्थायी और सुदृढ़ बनाने के लिए सब प्रकार से योगदान देने की सविनय साम्रह्य प्रार्थना है ।

सप्त ऐक्य सदा अमर रहो ।

‘जैन जयति शासनम्’ ।

‘शमो सधस्स’

‘सधे शक्ति’

पतुर्विध मय की सांझ सुटद रहो ।
 अपने दोषों को दूर करके विशुद्ध जीवन जीओ ।
 मय के गुण देखत २ श्रेय गुणी बन जाता है ।
 गुणप्राप्तक धनों तो, मय तुम्हारे स्नेही बनने ।
 दित मित और सत्य बोलना या मौन रहना ।
 सब कामला चाहो पुरा किसी कामत विचारो ।
 अहिंसा, सत्य और मयम जैन-जीवन है ।
 गुणीजन को पंडिता, अबगुण देख मध्यस्थ ।
 दुस्त्रियो पर करुणा करें, मैत्रीभाव समस्त ॥

शिनमस्तु सब अगत

परहितनिरता भवतु भूतगणाः ।

दोषा प्रयातु माशं,

सर्वत्र सुखी भवतु लोक ॥

जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ।

परिशिष्ट १०—५

श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रमण सघ को
सुदृढ़ व स्थायी बनाने के लिए
अ भा श्री ३० स्था जैन कॉन्फरेन्स के
१२ वें सादही अधिवेशन के दो प्रस्ताव



प्रस्ताव नं०—१०

(अ) कॉन्फेस की तरफ से प्रारम्भित “सघ देख्य योजना” जो मत्त तीन वर्षों से चल रही है और जिसको सफल बनाने के लिए कॉन्फरेस ने तथा माधु सम्मेलन नियोजक समिति ने सतत अधिश्रान्त प्रयत्न किया है। जिसको पूज्य मुनिराज ने अधिक धिक हार्दिक सहकार दिया है, इतना ही नहीं परन्तु सग्त गरभी में अपने श्वासस्थ की परवाह किये बिना दूर दूर से उप विहार करके श्रद्धसाधु सम्मेलन सादही में पधार कर, साम्प्रदायिक मतभेदों को दूर करके, प्रेमपूर्णक सगठन योजना बना कर “श्री वर्द्धमान

स्था० जैन अमण मघ" की स्थापना की है। इसके लिए सभ मुनिराजा के प्रति यह अधिवेशन मापूर्ण भद्धा और आदर प्रदर्शित करता है और बहुमान की दृष्टि से देखता है। स० महावीर क शासन म वृहत्साधु सम्मेलन एक अद्वितीय और अभूतपूर्व घटना है, जो जैन शासन के इतिहास म स्वर्णचरों ने चिरमरणीय स्थान प्राप्त करता है। वृहत्साधु सम्मेलन सादरी में हुइ कार्यवाही को यह अ० भा० श्री स्था० जैन का प्रेस का १२ वों अधिवेशन हार्दिक अनुमोदन करता है और सम्मेलन के प्रस्तावों के पालन में भावकोचित मवालीय और हार्दिक सहकार दृढतापूर्वक देने की अपनी सब प्रकार की जिम्मेदारी स्वीकार करता है। इसके लिए भारत मर के सब ग्धानकवासी जैन भी संघों को यह अधिवेशन अनु रोव करता है, कि साधु सम्मेलन के प्रत्येक प्रस्तावा का पालन फगाने के लिए सब अपनी अपनी जिम्मे दारी पूषक सक्रिय कार्य करें।

(क) पिछे जिन सम्प्रदायों के और मुनिवरों के प्रतिनिधि सादही सम्मेलन में एक या दूसरे कारण से पधार नहीं सके हैं, उनको यह अधिवेशन साप्रद अनुरोध करता है, कि वे "भी वर्तमान स्या० चैन भ्रमण संध" में एक वर्ष में सम्मिलित हो जायें, इसी से जाका और स्या० चैन समाज का गौरव है।

(ख) यह अधिवेशन भारपूर्वक घोषित करता है कि समस्त भारतवर्ष के भी वर्तमान स्या० चैन भ्रमण संध के सगठन में जो साधु साध्वी एक वर्ष में सम्मिलित नहीं होंगे उनके लिए कॉन्फरेन्स को गम्भीर विचार करना होगा।

सन १९३३ में बनमेर सम्मेलन में आरम्भित कार्य आज मकल हो रहा है, इससे यह अधिवेशन हार्दिक मन्तोष प्रगट करता है।

प्रस्तावक—भी कुन्दनमल्ल भी भा० फिरोदिया
 अनुमोदक—भी भीमनबाब चकुमार्द शाह M P
 " बनेपन्दमाह दुर्लभजी जीहरी

श्री धीरजलाल के० तुरछिया

॥ मोनीलाल सा० मूधा, सनारा

॥ मोहनमलजी चोरोदिया, मद्रास

॥ बालचन्द्रजी श्रीश्रीमाल, रतलाम

प्रस्ताव १०—११

साइडी व बृहन्सातु सम्मेलन में प्रस्तावित 'श्री
वर्द्धमान स्था० जैन भ्रमण मण्ड' की स्थापना, स्त्री
कृत विधान और नियमोपनिषदां का पालन करा
के लिए तथा वर्द्धमान स्था० जैन भ्रमण मण्ड
आचार्य और मन्त्री मण्डल के साथ सतत संपर्क
रह कर माधु सम्मेलन के प्रस्तावों का अमल करा
के लिए निम्न ३१ सदस्यों के अतिरिक्त आवश्यक
सदस्यों की सम्मिलित (Co-opt) करन की सत्ता
साथ, एवं "संचालक (Steering) समिति" नियुक्त
की जाती है —

१ शेट श्री चम्पालाल जी बाठिया प्रमुख, भोपास

२ श्रीमान् तुन्दनमलजी मा चिरोदिया, अहमदनगर

३	आमान् धीरजभाई के० तुरगिया-मंत्री	ध्यावर
४	दि या भी मोतीलालजी मुधा	सतारा
५	सो माणकच वृत्री मुधा	अहमदनगर
७	„ देवराजजी सुराणा	ध्यावर
८	„ जबाहरलाजी मुणोत	अमरावती
९	„ हरजमरायजी जैन	अमृतसर
१०	„ रतनलालजी मिश्र	आगरा
११	„ वनच २ भाई दुर्लभजी जवरी	जयपुर
१२	„ रत्नलालना चोरदिया	फलोदी
१३	„ शातिलालजी भाई मंगलदाम शेंड	अहमदाबाद
१४	„ जेठमलजी सठिया	बीकानेर
१५	„ जादवजी मयनलाल वकील	सुरेन्द्रनगर
१६	„ जेठालाल प्रागजी रूपाणी	जुनागढ़
१७	„ गांडाकाळ नागरदास वकील	चोटाद
१८	रा० घ० मोहनलाल पोपटभाई	राजकोट
१९	भी सरदारमलजी छांनेड	साहपुरा
२०	„ हरिलाल अनोपचंद सघवी	सम्भाल

(६४)

२१ ,, यलजी माड लग्नमरी नपु	बम्बई
२२ श्री बीमनलाल चक्रभाई शाह	"
२३ ,, तुलभजी करायजी खेताणी	"
२४ ,, बीमनलाल पोपलाल शाह	"
२५ ,, प्राणुलाल इंदरजी शेठ	"
२६ ,, गीरधरलाल नामोदर दस्तगी	"
२७ ,, सुगनराजजी मेहता वकील	रायपुर
२८ ,, मौभागमलजी कोचेरा	चापरा
२९ ,, डॉ० नारणजी मोनजी वारा	बम्बई
३० ,, मिथीलजी यापणा	महसोर
३१ ,, राजमलजी चौरदिया	पालीसगा
३२ ,, हीराचन्दजी खीवसरा	पूना
३३ ,, ताराच दनी सुराणा	यवतमाल
३४ ,, विमनसिंहजी लोढा	रवावर
३५ ,, छगनमलजी मुया	बेंगलोर
३६ ,, हीरालालजी नदिना	खाचरोद
३७ ,, धादमलजी मारु	महसोर

(६५)

३८ भी सुनानमलजी मेहता	जावरा
३९ ,, बापुलालजी शोबरा	इतलाम
४० ,, रतनचंदजी समलानी	सादकी
४१ ,, अनोपचंदजी पुनमिया	,,
४२ ,, लल्लुभाई नागरदास	लीबकी
४३ ,, प्रेमचंद भाई मुरामाई	,,
४४ ,, सुगनचंदनी लूणावत	धामणगाम
४५ ,, कल्याणमलजी येद	अचमर
४६ ,, अर्जुनलालजी गणी	भीलवाडा
४७ ,, उमरावमलनी दहा	अजमेर
४८ ,, चैवत भाई दामजी भाई	भाडवी कच्छ
४९ ,, जेसीगमाई पोवाभाई	अहमदाबाद
५० ,, माणकचंदजी छल्लाणी	मैमूर
५१ ,, कॉ फरेस क मंत्री-Ex Officio	

प्रस्तावक — धीरजलाल वें० तुरविया

अनुमोदक — मणिलाल धनमालीदास

અનુમોદન દેને હુય રાં સાં મણિકાલ ભાઈ ને
 વહા કિ-“ભૌરાષ્ટ્રના સાધુ સાધ્વીઓ આવેલ નથી
 તેમાં સમણ ગમીત મૂલ કરી છે અને તેથી અમારે
 નીચે પોવાનુ રહે છે, અયે સૌરાષ્ટ્ર કચ્છ ગુજરાતના
 આવેલ માર્દાઓનું હું વિનની કરીશ કે તેઓ પોતાન
 ઘર જઈને પૂં મુનિરાજો ન અત્રે ધવેલ કાર્યવાહીની
 માહિતી આપે અને સંગઠન ના આ કાર્યમાં શામલ
 થવા સમજાય । સૌરાષ્ટ્ર-કચ્છ-ગુજરાત ના પૂં
 મુનિરાજો આ સંગઠન માં મની જાય સર્મા જ તેમની
 અને આપણા મૌની શોભા છે ।”



